International Journal of Applied Research 2015; 1(10): 857-859

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(10): 857-859
www.allresearchjournal.com
Received: 01-07-2015
Accepted: 03-08-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

सन्त एवं सूफी हिन्दी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. शिवदत्त शर्मा

सन्त एवं सूफी कवियों का हिन्दी साहित्य को देन अद्वितीय है। दोनों ही धाराओं के कवि मध्यकालीन विषम परिस्थितियों की उपज हैं।दोनों ही धाराओं के कवियों का अभिप्रेत्य हिन्दु मुस्लिम एकता एवं परस्पर समानता था। सन्तों पर पूर्ववर्ती सिद्धों नाथों का प्रभाव स्पष्ट है। सूफी भी इस्लाम के अतिरिक्त भारतीय विचार धारा से अप्रभावित न रह सके ।सन्तों की विचार धारा पर सिद्धों और नाथों की विचारधारा का इतना गहरा प्रभाव हुआ कि उनके अनेक पदों में यौगिक साधना की शब्दावली स्पष्ट देखी जा सकती है। सन्तों की वाणी में इडा पिंगला सुषुम्ना आदि नाडियों षटचक्र सहस्त्रकमल आदि का जगह जगह वर्णन मिलता है।सन्तों का व्यक्तित्व अक्खड एवं मस्तमौला था।उन्होंने रूढियों को तोडने एवं सामाजिक सुधारों के लिए खण्डनात्मक प्रवृत्ति को हथियार बना कर प्रयोग किया। [1]

सन्त काव्य धारा के अधिकांश कवि निम्न वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं। कबीर रैदास दादूदयाल आदि मूर्धन्य कवि अन्त्यज थे। [2] कोई भी सन्त सुन्दरदास के इलावा शिक्षित नहीं था। सन्तों में कबीर सर्वाधिक प्रखर प्रवृत्ति केथे। उनके सम्मुख जो आया उनकी वाणी के कुप्रहार से बच नहीं पाया। उनके लिए इस्लाम अथवा हिन्दुधर्म दोनो की त्रुटियां समान रूप से आलोचना का केन्द्र रहीं।सन्त निर्गुण विचारधारा में विश्वास रखते थे।उन्होंने प्रभु को सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान तथा गुणातीत स्वीकार किया है। उनका ब्रह्म घटघट वासी है वह पुष्पवास से भी पतला है और उसके गुणों का बखान असम्भव सा है। उन्होंने अपने ब्रह्म को निर्गुण होते हुए भी सगुणात्मक नामों से सम्बोधित किया है सम्भवतः इसका कारण यह है कि ये पदनाम पहले से ही लोक प्रचलित थे ंपरन्तु उन्होंने अपने राम को किसी आलोचना का शिकार होने से पहले ही स्पष्ट घोषणा कर दी है। [3]

रामनाम तिहु लोक वखाना रामनाम का मरम है आना।।

सन्त कवियों ने जातिपाति का डटकर विरोध किया। उनका यह दृढ विश्वास था कि जब तक जातिपाति की कुरीति को समाज से समूल उखाड नहीं दिया जाता तब तक समाज में शांति और परस्पर सौहार्द्र पैदा नहीं हो सकता। प्रायःसभी सन्त भुक्तभोगी थे साथ ही साथ उनके मन में प्रताडना और सामाजिक अपमान भी इस प्रतिक्रिया का कारण बना। कबीर जैसे धुरन्धर सन्त ने तो जो मुंह में आया कह दिया है यह केवल हिन्दुओं के लिए हो ऐसा नहीं है उन्होंने जहां अनुचित देखा उसे ही आडे हाथों ले लिया।उन्होंने स्पष्ट घोषणाकी है–

जातपात पूछे नहीं कोई हरि को भजे सो हरि को होई।

जातिपाति की आलोचना में मुख्य रूप से ब्राह्मण और पाण्डे उनका मुख्य शिकार रहे हैं।उन्हाने ब्राह्मणों से सीधा प्रश्न किया है कि अगर तुम जन्म से ही श्रेष्ठ हो तो फिर तुम्हारा इस दुनिया में आने का ढंग भी भिन्न होना चाहिए।

जो तू ब्राह्मण ब्राह्मणी जाया तो आन बाट क्यों नहीं आया। [4]

कर्मकाण्ड एवं बाह्याडम्बरो का विरोध सन्त साहित्य में सर्वविदित ही है।मूर्ती पूजा, तीर्थ, ंव्रत, नमाज, रोजा आदि का सन्तों ने विरोध किया है। प्रसिद्ध सन्त नामदेव के अनुसार –एके पाथर किज्जे भाव दूसरे पाथर धरिए पांव। अर्थात् एक पत्थर पर पांव रखा जाता है और दूसरे की पूजा की जाती है। पत्थर में भगवान होता तो यह कैसे सम्भव होता। सन्त कबीर ने भी कुछ इसी तरह के भाव व्यक्त किए हैं–

न्हाय धोए क्या भया जो मन मैल न जाए।
मीन सदा जल में रहे धोए बास नहीं जाए।।

कबीर के अनुसार मात्र नहा धो लेने से ही प्रभु की प्राप्ति नहीं हो सकती मन की मैल को धोना अनिवार्य है।उदाहरण देकर कबीर समझाते हैं कि तीर्थों में स्नान करने से कोई विशेष लाभ नहीं होगा जब तक मन की मैल को साफ नहीं कर लिया जाता। मछली तो सदा जल में ही रहती है फिर भी उसकी दुर्गन्ध नहीं जाती। अतः मन की मैल को धोना आवश्यक है।

सन्तों की विचार धारा पूरी तरह भारतीय है कुछ आलोचक सन्तों की विचार धारा पर इस्लाम का प्रभाव मानते हैं जो नितान्त निराधार एवं असत्य है। सन्तों ने इस्लाम के एकेश्वरवाद को न अपना कर अद्वैतवाद को ही अपनाया है।

सन्त कवियों ने लोकभाषा को ही अपनाया तथा उसी मैं ही रचना की क्योंकि इनका लक्ष्य अपनी बात को जनसाधारण तक पहुंचाना था। उनकी भाषा को सधुक्कडी या सन्त भाषा भी कहा जा सकता है। उनकी भाषा में व्रज, अवधी, राजस्थानी, पंजाबी आदि अनेक भाषाओं के शब्द हैं। सन्तों की भाषा के आगे व्याकरण के नियम शिथिल होते देखे जा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त सन्तों ने लोक भाषामें साहित्य की रचना की। सन्तों का उद्देश्य जन साधारण को अपनी सीधी सादी भाषा में अपनी बात समझाना ही था उनका लक्ष्य साहित्यिक रचना करना नहीं था।

सन्त साहित्य में साहित्यिक गुण अनायास ही आ गए हैं क्योंकि सन्तों को न तो काव्य सिद्धान्तों का बहुत ज्ञान ही था न ही यह उनका लक्ष्य ही था।सन्तों का लक्ष्य मुख्य रूप से प्रभु की भक्ति था काव्य तो सहज ही बन गया। निर्वेद एवं शान्त रस की निष्पत्ति उन के काव्य में देखी जा सकती है। कहीं कहीं मर्यादित श्रृंगाार रस का चित्रण भी उनकी वाणी में मिलता है।सन्त कवियों का सम्पूर्ण काव्य उनकी साधना का ही एक अंग है।दार्शनिक दृष्टि से उनका काव्य अद्वैतवेदान्त से भी प्रभावित दिखाइ देता है। शिल्प की दृष्टिसे इनका काव्य गेय मुक्तकों का भण्डार है। दोहा जैसे छोटे छन्द में इन्होंने अद्भुत विचार तथा भाव भरने में सफलता पाई है। भाषाकी दृष्टि से सन्त सधुक्कडी भाषा के जनक हैं।उनका काव्य सहज अलंकृत काव्य है।सन्तों का काव्य उच्च कोटि का धार्मिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक साहित्य है तथा उच्च कोटि का समाज सुधारक साहित्य है। सही अर्थों में समाज में समरसता लाने में इन सन्तों का योग दान अविस्मरणीय है। [5]

सूफियों का भी योगदान सन्तों की तरह अविस्मरणीय है। सूफी शब्द सम्भवतः फारस से भारत आया। मदीना की मस्जिद के बाहिर चबूतरों पर बैठ कर प्रभु विषयक चिन्तन करने वाले चिन्तकों को प्रायः सूफी कहा जाने लगा क्योंकि चबूतरों को सुफजा कहा जाता था। कुछ विद्वानों का मत है कि सूफी शब्द सोफिया से निकला है जिसका अर्थ है– ज्ञान। इस तरह सूफी उन लोगों को कहा जाता था जो ज्ञानवान हो। कुछ आलोचकों का मानना है कि ऐसें लोग जो फारस में उन या सूफ के वस्त्र पहनते थे इस कारण उन्हें सूफी कहते थे। इसतरह सूफी शब्द का जन्म भले ही सूफ सफ या सोफिया से मान लिया जाए परन्तु सत्य यह है कि जो चिन्तक प्रेम मार्ग द्वारा ईश्वर अल्ला को पाने के लिए प्रयास रत रहते थे उन्हें सूफी कहा जाता था इसमें दो मत नही। सूफी कर्मकाण्डों में विश्वास नहीं करते थे। इस्लाम का प्रभाव इनके दर्शन पर स्पष्ट देखा जा सकता है। इनका प्रवेश मुस्लिम शासकों के भारत में प्रवेश के साथ ही माना जाता है। इनके चार सम्प्रदाय भारत में आए जिनमें सबसे पहले चिश्ती सम्प्रदाय ने भारत मे 12वीं शताब्दी में प्रवेश किया। इस सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध सूफी सन्त मुइनुद्दीन चिश्ती थे।इसके अतिरिक्त सुहरवर्दिया नक्शवन्दी आदि सम्प्रदाय भारत में आए। इन चारों सम्प्रदायों में परस्पर मौलिक भेद नहीं है केवल आचार सम्बन्धी धारणाओं का ही अन्तर है। ये चारों सम्प्रदाय प्रेम कों महत्व देते हैं। सांमाजिक समानता में इनका दृढ विश्वास है।[6]

सूफी कवियों ने अपने काव्य को लोकप्रिय बनाने के लिए हिन्दु जनजीवन से कहानियां ले कर अपनी काव्य रचनाएं प्रस्तुत की ।उदार होनेके कारण इन्होंने सूफी सिद्धान्तों के साथ साथ भारतीय विश्वासों, रूढियों तथा पौराणिक गाथाओं का सुन्दर वर्णन किया है। जायसी का पद्मावत इस सम्प्रदाय की अद्भुत रचना है।[7]

सूफी प्रेमाख्यान परम्परा के कवि थे। उनकी प्रेमपूर्ण कथाओं में अध्यात्म से अधिक प्रेम का सुन्दर चित्रण देखने को मिलता है।सूफियों के काव्य में स्थायी भाव रति ही है जो श्रृंगार रस का स्थाई भाव है। उनका प्रेम निरूपण समाज विरोधी नहीं है। सूफी काव्य में आध्यात्म की तुलना में सौंदर्य एवं प्रणय का चित्रण अधिक है। श्रृंगार के साथ साथ वीररस, करुण एवं शान्त रस का विवेचन हुआ है।

सूफी साहित्य प्रारम्भ में हस्त लिखित ही था। जनसाधारण की ज्ञान पिपासा को शांन्त करने के लिए ऐसी काव्य रचनाएं की जातीं थीं। सूफी कवियों ने चमत्कारपूर्ण रचनाओं का प्रदर्शन किया। काम शास्त्र, रीति, वैद्यक, अश्व विज्ञान तथा युद्धकला के ज्ञान कोष के रूप में भी इन काव्यों को देखा जा सकता है।

सूफियों ने सन्तों की तरह खण्डन का मार्ग नहीं अपनाया।उन्होंने कलात्मक ढंग से हिन्दु मुस्लिम एकता की नींव रखी। दोनों की जीवन पद्धतियों को साथ साथ चित्रित कर उनकी समानता पर बल दिया। इस प्रयास में प्रेम मार्ग अत्यधिक व्यावहारिक एवं प्रभावशाली सिद्ध हुआ।[8]

सूफी साधना में नायिका स्वयं खुदा की प्रतीक है और बन्दा उसका प्रेमी है। इस प्रकार नारी साधक न बन कर लक्ष्य बन जाती है। सूफी कवियों ने नारी के नखशिख चित्रण के साथसाथ उसके अन्य गुणेां का चित्रण भी किया है। सती नारी का आदर्श उन्होंने भी अपने समक्ष रखा।

सूफियों ने लौकिक प्रेम कहानियों के माध्यम से अलौकिक प्रेम कथाओं का वर्णन मुक्तक शैली में न करके प्रबन्धात्मक शैली को अपनाया है। इनके काव्य में मसनवी एवं भारतीय महाकाव्य शैली का मिलाजुला रूप मिलता है।सूफियों ने भारतीय परम्परा के अनुरूप काल्पनिक पात्रों एवं घटनाओं को आधार बना कर कथानक चुने हैं। सूफियों ने प्रेम पंथ की कठिनाइयों का कारण एवं आत्मा एवं परमात्मा या खुदा के मिलन में रुकावट पैदा करने वाले को शैतान कहा है।

सूफी कवियों ने अपनी रचनाओं में कुछ शब्दों को सांकेतिक रूप से प्रस्तुत किया है। जायसी जैसे कवियों ने तो पूरे काव्य को रूपक में बदलने का सफल प्रयास किया है। जायसी जैसे सूफियों ने प्रतीक विधान के माध्यम से सूफी काव्य को आध्यात्मिकता के रंग में रंगने में अभूतपूर्व सफलता पाई है।[9]

सूफियों की साहित्यिक भाषा ठेठ अवधी मानी जाती है। उस्मान और नसीर की रचनाओं पर भोजपुरी लोकभाषा का प्रभाव है। सूफियों की लौकिक अवधी तुलसी की साहित्यिक अवधि से भिन्न है क्योंकि इसमें तद्भव एवं अपभ्रंश शब्दावली अधिक मिलती है। लोकजीवन में प्रयुक्त होने वाली लोकोक्तियां तथा मुहावरे इनकी भाषा में अधिक प्रयुक्त हुए हैं।

सूफियों ने दोहा ,चौपाई ,सोरठा,तथा सवैया आदि छन्दो का प्रयोग किया है कहीं कहीं फारसी छन्दों का भी प्रयास मिलता है। काव्य में स्थान स्थान पर अलंकारों की सुन्दर छटा भी मिलती है। उपमा, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति,अनुप्रास तथा अतिशयोक्ति जैसे सुन्दर अलंकारों का प्रयोग उनके काव्य में प्रायः दिखाई देता है।

सूफियो का काव्य निश्चय ही मनोरंजन का काव्य है इसलिए ही यह अत्यधिक लोकप्रिय भी रहा। सूफियों ने मनोरंजन के लक्ष्य को सम्मुख रखते हुए भी मर्यादित आचरण की अनदेखी नहीं की।उन्होंने प्रेम का प्रचार किया और मानव मात्र के कल्याण की कामना की। गजल तथा कब्बाली को सूफियों ने लोक प्रिय बनाने में कोई कसर नहीं छोडी।[10]

सन्त और सूफी काव्य की हिन्दी साहित्य को बडी देन है। यह कहा जा सकता है कि अगर इस साहित्य को निकाल दिया जाए तो हिन्दी साहित्य निर्जीव लगेगा ठीक वैसे जैसे आत्मा के बिना शरीर।

गुरु का महत्व– दोनों के साहित्य मे कुछ ऐसे तत्व हैं जिनमें कई समानताएं एवं विषमताएं हैं।सन्तों और सूफियों के काव्य में गुरु या पीर को अधिक महत्व प्राप्त है।गुरु ही सांधक को उसकी सिद्धि या लक्ष्य तक पहुंचाने का माध्यम है।गुरु की कृपा से ज्ञान उत्पन्न होता है और ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।गुरु कृपा से ही माया या शैतान का प्रभाव नष्ट होता है।अतः गुरु ही इस संसार से पार उतारने की नौका है।[11]

माया या शैतान–माया या शैतान को दोनों ने ही अपनी साधना में वाधक माना है। सन्तों की दृष्टि में कनक और कामिनी ही माया है जो सर्वथा त्याज्य है। सूफी फकीर साधक परीक्षा लेने के लिए शैतान को आवश्यक मानते हैं।

निराकार ईश्वर–सन्त और सूफी दोनों ही साधक ईश्वर को निराकार मानते है। उसे प्राप्त करने का सबका अधिकार है। उसमें जाति पाति या उंच्च नीच आदि किसी भी सामाजिक मान्यताओं की स्वीकृति नहीं है।

भारतीयदर्शन से प्रभावित–दोनों ही धाराएं भारतीय दर्शन से प्रभावित है।हठ योग, अद्वैत वाद और वैष्णव धर्म से पूरी तरह प्रभावित दिखाई देते हैं।

प्रेमतत्व कीप्रमुखता–दोनों ही काव्य धाराएं प्रेमको प्रमुख स्थान देतीं हैं।सन्त काव्य में प्रेम व्यक्तिगत साधनों में प्रयुक्त होता है जबकि सूफियों ने लौकिक प्रेंम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है।

रहस्यवाद–सन्त और सूफी दोनों ही कवि रहस्यवादी हैं। दोनों ही अव्यक्त सत्ता का उल्लेख अपने काव्य में करते हैं। आचार्य शुक्ल का मानना है कि सूफियों का रहस्यवाद विशुद्ध भावनात्मक कोटि का है जबकि सन्तों का रहस्यवाद साधनात्मक कोटि का है क्योंकि सन्तों के रहस्यवाद में विविध यौगिक प्रक्रियाओं का उल्लेख है।[12]

जगत–मिथ्या– दोनों के काव्यों में जगत को मिथ्या,क्षणिक,नश्वर,और क्षणभंगुर माना है। सन्तों ने जगत की निस्सारता का उल्लेख बडे विस्तार से किया है। सूफियों ने भी अपने ढंग से संसार की निस्सारता का वर्णन बडे ही मार्मिक ढंग से किया है।

विरह के उन्मुक्त कवि–सूफी और सन्त विरह के उन्मुक्त कवि हैं। दोनों के काव्य में एक असीम वेदना और कसक सुनाई देती है।इनका विरह विश्व व्यापी है। रवि, शशि,नक्षत्र सभी उसी के विरह में जलने लगते हैं।

कुछ समानताओं के इलावा दोनों के काव्य एवं विचार धाराओं में असमानताएं भी देखने को मिलतीं हैं। जिनका वर्णन इस प्रकार है–

सन्त ज्ञान और सूफी प्रेम के पक्षधर– दोनों का ईश्वर निराकार है परन्तु सन्तों ने उसे ज्ञान से तथा सूफियों ने उसे प्रेम से प्राप्य माना है।सन्तों ने ज्ञान को अधिक महत्व दिया है। सूफियों ने प्रेम को ही उसे पाने का एकमात्र मार्ग माना है।

इसके अतिरिक्त सूफियों ने हिन्दु मुस्लिमों में सांस्कृतिक एकता द्वारा दोनों वर्गों में एकता स्थापित करने का सफल प्रयास किया है जबकि सन्तों ने मानवीय धर्म के द्वारा एकता का उपदेश दिया है।

कबीर आदि सन्तों ने सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों के लिए खण्डनात्मक प्रवृत्ति का सहारा लिया है जबकि जायसी आदि सूफियों ने मण्डनात्मक प्रवृत्ति को अपनाया है।सूफियों ने हिन्दु घरानों की प्रेम कहानियों को लेकर प्रेम की अलौकिकता का चित्रण कियाहै जो अत्यधिक लोकप्रिय सावित हुआं।

सन्त कवि नहीं साधक हैं वे धर्म जाति का भेद मिटा कर सर्वधर्मसमभाव पैदा करना चाहते थे। दूसरी ओर सूफी साधक के साथसाथ कवि अधिक थे। उनका काव्य उनकी नैसर्गिक प्रतिभा का साक्षात् प्रमाण है।

सन्त स्वभाव से ही अक्खड प्रकृति के थे। उनके काव्य में इसके स्पष्ट संकेत मिलते हैं।जबकि सूफियों के व्यक्तित्व में सरलता और विनम्रता पग पग पर दिखाई देती है।

सन्तों ने प्रकृति कोनश्वर मानते हुए अन्तः साधना पर बल दिया है। इनके अनुसार ईश्वर सत्य और जगत मिथ्या है।इसलिए उन्होंने प्रकृति को उपेक्षित कर परम सत्ता को ही महत्व दिया है। सूफियों ने प्रकृति का रागात्मक वर्णन किया हैं।उनका प्रेम स्वरूप ईश्वरसृष्टि के प्रत्येक कण में दृष्टिगोचर होता है।

सन्त कवियों ने अपनी भावाभिव्यक्ति मुक्तक काव्य के रूप में की है जबकि सूफी कवियों ने प्रबन्ध काव्य के रूप में की है।काव्य शास्त्रीय ज्ञान की दृष्टि से सूफी सन्तों से आगे दिखाई देते हैं।

सन्तों की प्रेम भावना विशुद्ध भारतीय है और सूफियों की प्रेम भावना भिन्न है जिस पर इस्लाम का भी प्रभाव परिलक्षित होता है। सन्तों ने आत्मा को पत्नी और परमात्मा को पति के रूप में स्वीकार किया है [13] ,जबकि सूफियों ने आत्मा को पति और परमात्मा को पत्नी के रू॰ कल्पित किया है। सन्तों ने मिलने की इच्छा आत्मा रूपी पत्नी में दिखाई है जबकि सूफियों ने इसके विपरीत आत्मा रूपी पति मे दिखाई है।

सन्तो ंपर सिद्धों एवं नाथों का प्रभाव प्रत्यक्ष है। इन्हीं के चमत्कारोंसे प्रभावित होकर सन्तों ने उलटवासियों का प्रयोग किया है। सूफियों ने लोकमंगल की दृष्टिसे अपनी काव्य रचना की हैऔर उनके काव्य में कहीं भी उलटवासियों का उल्लेख नहीं हैं।

सन्त कवियों की भाषा खिचडी अर्थात् मिश्रित भाषा है जिसमें प्रांतीय भाषाओं के शब्दों की बहुतायत है जबकि सूफियों की भाषा लोक प्रचलित अवधी है जिसमें अरबी एवं फारसी के शब्दों का पुट मिलता है।

सन्दर्भ सूचि

1. द्विवेदी हजारी प्रसाद कबीर पृ65
2. शर्मा वेणी प्रसाद सन्त रविदास वाणी पृ 72
3. तिवारी पारस नाथ कबीर वाणी संग्रह पृ 116
4. उपरोक्त पृ 36
5. चौहान डॉ प्रताप कबीर साधना और साहित्य पृ 87
6. शुक्ल रामचन्द्र जायसी ग्रन्थावली पृ 118
7. उपरोक्त पृ 86
8. शुक्ल रामचन्द्र जायसी ग्रन्थावली पृ 134
9. जायसी मलिक मुहम्मद पद्मावत पृ 112
10. शुक्ल रामचन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 156
11. शर्मा वेणी प्रसाद सन्त रविदास वाणी पृ 126
12. शुक्ल रामचन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 156
13. चतुर्वेदी परशु राम सन्त काव्य पृ 76